SKU JOURNAL OF LEX VIBRENT
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
January – March 2025
E-ISSN 3048-7323
Vol-2
Issue-1

मध्यप्रदेश में युवाओं की बेरोजगारी और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं पर एक व्यापक अध्ययन

बीरेन्द्र पाल
समाजशास्त्र विभाग
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

यह अध्ययन भारत के मध्य-प्रदेश राज्य से लिया गया है। जिसमें मानसिक स्वास्थ्य पर युवा बेरोजगारी के प्रभाव की जांच करता है। जो युवाओं के सामने वाली सामाजिक आर्थिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करता है। मध्य प्रदेश में तेजी से औद्योगीकरण के बावजूद उच्च युग वर्ग बेरोजगारी की समस्या से जूझ रहा है। खासकर ग्रामीण इलाकों में यह शोध शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के 18 से 30 वर्ष की आयु के युवाओं के साथ मात्रात्मक और गुणात्मक साक्षात्कार को जोड़ता है अध्ययन में पाया जाता पाया गया है। कि 50% प्रतिभागी बेरोजगार है। जिनमें से 60% बेरोजगार मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं समस्याओं मुख्य रूप से तनाव चिंता और अवसाद से गिरे हुए हैं। मानसिक स्वास्थ्य सहायता तक पहुंच सीमित है। 60% के पास संसाधनों की कमी है शोध में व्यावसायिक प्रशिक्षण में एक महत्वपूर्ण अंतर पर भी प्रकाश डाला गया है जिससे 27.6% युवाओं को ऐसा समर्थन मिल रहा है।

मुख्य शब्द

युवा बेरोजगारी, मानसिक स्वास्थ्य, मध्य प्रदेश भारत आर्थिक प्रभाव, रोजगार नीतियां, मनोवैज्ञानिक कल्याण।

परिचय

भारत में युवाओं के बीच बेरोजगारी एक गंभीर सामाजिक-आर्थिक चुनौती बन गई है। जो गरीबी असमानता और खराब मानसिक स्वास्थ्य जैसे अन्य मुद्दों को बढ़ा रही है। भारत के तेजी से विकसित हो रहे राज्यों में से एक मध्य प्रदेश युवा बेरोजगारी और मानसिक स्वास्थ्य के बीच

जटिल संबंधों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण केस स्टडी है। जबकि मध्य प्रदेश में महत्वपूर्ण औद्योगिक विकास और शहरीकरण देखा है। इन विकासो के परिणामस्वरुप इसके युवाओं के लिए आनुपातिक रोजगार के अवसर नहीं मिले हैं। जिससे युवा आबादी का एक बड़ा हिस्सा बेरोजगारी का सामना कर रहा है। जो चिंता तनाव जैसे विभिन्न मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों को बढ़ाता है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना है कि मध्य-प्रदेश में युवा बेरोजगारी दरों के लिए जिम्मेदार आर्थिक कारकों की जांच करना और यह समझना की रोजगार के अवसरों की अनुपस्थिति युवाओं के बीच मानसिक स्वास्थ्य परिणाम को कैसे खराब कर सकती है। विशेष रूप से अध्ययन ग्रामीण और शहरी युवाओं के बीच असमानताओं पर प्रकाश डालना चाहता है।और यह भी की कैसे उनका सामाजिक-आर्थिक वातावरण उनकी रोजगार संभावनाओं और मानसिक स्वास्थ्य को आकार देता है।

साहित्य समीक्षा

भारत में युवा बेरोजगारी- भारत में युवा बेरोजगारी एक स्थाई समस्या रही है जो कुछ क्षेत्रों में आर्थिक वृद्धि के दौर के बावजूद पिछले कुछ वर्षों में लगातार बढ़ती जा रही है। भारत के श्रम बाजार में अनौपचारिक रोजगार की प्रधानता है जो कम नौकरी, सुरक्षा, कम वेतन,और पर्याप्त सामाजिक लाभ प्रदान करता है। बनर्जी और डुप्लो (2019) का तर्क है कि भारत में युवा बेरोजगारी में योगदान देने वाली प्रमुख बधाओ में शिक्षा का निम्न स्तर कौशल बेमेल और औपचारिक क्षेत्र की नौकरियां तक सीमित पहुंच शामिल है। युवा लोगों के लिए एक मजबूत नौकरी बाजार की कमी एक अविकसित व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रणाली के साथ कई युवाओं और सीमित करियर की संभावनाओं के साथ छोड़ देती है। इसके अलावा देश की बढ़ती अर्थव्यवस्था आईटी और वि निर्माण जैसे क्षेत्रों में नौकरियां पैदा करते हुए हर साल श्रम बाजार में प्रवेश करने वाले युवाओं की बढ़ती संख्या को अवशोषित करने में विफल रहती है। वैश्विक स्तर पर युवा बेरोजगारी का मुद्दा सिर्फ भारत तक सीमित नहीं है। बेल और ब्लैचप्लावर (2011) द्वारा किए गए शोध से पता चलता है कि 2008 में वैश्विक आर्थिक मंदी के कारण नौकरियों में भारी कमी आई खास तौर पर युवाओं में इस आर्थिक स्थिरता ने भारत जैसे विकासशील देशों में बेरोजगारी के मौजूद मुद्दों को और भी जटिल बना दिया है। हाल के वर्षों में भारत की समग्र

आर्थिक वृद्धि के बावजूद युवा बेरोजगारी दर उच्च बनी हुई है। और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित विशेष रूप से गंभीर है जहां औद्योगीकरण के परिणाम स्वरुप पर्याप्त रोजगार वृद्धि नहीं हुई है।

मध्य प्रदेश में युवा बेरोजगारी -मध्य प्रदेश में कुछ दशकों में तेजी से औद्योगिकरण और शहरीकरण हुआ है खासकर भोपाल इंदौर ग्वालियर तथा जबलपुर जैसे बड़े शहरों में इन केदो ने बड़ी संख्या में व्यवसाय व्यवसायों को आकर्षित किया है जो मुख्य रूप से वे निर्माण सेवाओं और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं हालांकि यह वृद्धि ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के अवसरों से मिल नहीं खाती है नतीजा ग्रामीण मध्य प्रदेश में युवा आबादी को रोजगार की महत्वपूर्ण चुनौतियां का सामना करना पड़ता है जिससे राज्य में बेरोजगारी दर बढ़ रही है यह समस्या मध्य प्रदेश की ग्रामीण क्षेत्रों में गुणात्मक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण तक पहुंच की कमी से और भी जटिल हो जाती है जिससे कई युवा नौकरी के लिए तैयार नहीं होते हैं इसके अलावा मध्य प्रदेश में ग्रामीण शहरी विभाजन का मतलब है कि ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं के मध्य रोजगार पाने या शहरी केदो की ओर पलायन करने की संभावना संभावना अधिक है जहां उन्हें सीमित संख्या में नौकरी के अवसरों के लिए कड़ी प्रतिवर्ता का सामना करना पड़ता है।

मानसिक स्वास्थ्य और युवा - बेरोजगारी और मानसिक स्वास्थ्य की बीच संबंध अनुसंधान का एक बढ़ता हुआ क्षेत्र कई अध्ययनों से पता चला है कि बेरोजगारी का सामना करने वाले युवा लोगों में और साथ चिंता तनाव जैसी मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित होने की संभावना अधिक होती है बेरोजगारी सामाजिक बहिष्कार पहचान की हानि और वित्तीय असुरक्षा की भावना पैदा करती है यह सभी मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की उच्च दलों से जुड़े हैं युवा बेरोजगारी का मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है खासकर यह युवा लोग समाज से अलगअलग महसूस करते हैं और आर्-थिक रूप से योगदान करने में असमर्थ होते हैं भारतीय संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य बेकार व्यापक है जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा विशेष रूप से युवा जनता और साथ और अन्य मनोवैज्ञानिक मुद्दों से पिड थे लैंसेज 2018 की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में मानसिक स्वास्थ्य विकास की दर दुनिया में सबसे अधिक है और युवा लोग सबसे कमजोर समूह में से है मानसिक बीमारी से जुड़ा कलंक अक्षर व्यक्तियों को मदद लेने से रोकता है जिसे इलाज ना हो पाने की स्थिति और मानसिक स्वास्थ्य के परिणाम खराब हो जाते हैं बेरोजगारी युवाओं के लिए वित्तीय स्वतंत्रता की कमी पारिवारिक अपेक्षाओं का बोझ और

सामाजिक मानकों को पूरा न कर पाने का डर सभी तनाव चिंता और और साथ में महत्वपूर्ण रूप से योगदान करते हैं।

मध्य प्रदेश में युवा मानसिक स्वास्थ्य- मध्य प्रदेश को अनोखी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को और बढ़ा देती है भोपाल जैसे शहरी इलाकों में नौकरी का बाजार तेजी से बढ़ रहा है लेकिन समय के साथ-साथ ही यहां प्रतिस्पर्धा की बहुत अधिक है और कई युवाओं को रोजगार मिलता है मिलना मुश्किल लगता है जिससे असफलता और पर्याप्तिता और तनाव की भावना पैदा होती है मध्य प्रदेश में ग्रामीण युवाओं को स्थानीय नौकरी के अवसरों की कमी के कारण अतिरिक्त दवा आपका सामना करना पड़ता है आसपास रोजगार के अभाव में कई लोग अपने परिवार और समुदायों को छोड़कर शहरी केदो में पलायन करने को मजबूर होते हैं जिसके परिणाम स्वरुप अलगाव और मानसिक संकट की भावना पैदा हो सकती है मानसिक स्वास्थ्य सहायता सेवाओं तक पहुंच की कमी से यह चुनौतियां और भी बढ़ जाती हैं खासकर ग्रामीण इलाकों में जहां मानसिक स्वास्थ्य देखभाल सीमित है और मानसिक बीमारी को लेकर कलंक अधिक प्रचलित है।

अनुसंधान पद्धति

इस अध्ययन में मिश्रित पद्धति दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है जिसमें मध्य प्रदेश में युवा बेरोजगारी और मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों के बीच संबंधों की जांच करने के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों डेटा संग्रह वीडियो को मिलाया गया है इस शोध का उद्देश्य क्षेत्र में उच्च युवा बेरोजगारी में योगदान करने वाले कारकों और इन कारकों ने युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित किया है इसकी व्यापक समझ प्रदान करना था अध्ययन में मध्य प्रदेश की ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया ताकि इन आबादी के बीच किसी भी असमानता की पहचान की जा सके।

नमूना जनसंख्या

अध्ययन में 18 से 30 वर्ष की आयु के युवाओं को लक्षित किया गया है किया गया जो अक्सर बेरोजगारी और मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों के मामले में सबसे आगे रहते हैं भोपाल इंदौर उज्जैन ग्वालियर सहित मध्य प्रदेश के विभिन्न जिले की कुल 160 व्यक्तियों का सर्वेक्षण किया गया ताकि उनकी रोजगार स्थिति मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक आर्थिक स्थितियों को समझा जा सके प्रतिभागियों को तीन समूह में वर्गीकृत किया गया कार्य बेरोजगार और अल्प

बेरोजगार वाले युवा यह नमूना शहरी और ग्रामीण दोनों आबादी का प्रतिनिधित्व करता था जिससे दोनों के बीच असमानताओ को उजागर करने में मदद मिली।

डेटा संग्रह उपकरण

अध्ययन में प्रतिभागियों की रोजगार स्थिति सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंचे पर मात्रात्मक डाटा एकत्रित करने के लिए एक संरक्षित संरक्षित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है प्रश्नावली में कई प्रमुख खंड शामिल थे।

1. जनसंख्या जानकारी आयु लिंग शिक्षा स्तर और स्थान शहरी बनाम ग्रामीण
2. रोजगार की स्थिति वर्तमान रोजगार बेरोजगार या अल्प रोजगार नौकरी से संतुष्टि और आय का स्टार
3. मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंचे मानसिक स्वास्थ्य सहायता की उपलब्धता उपयोग की आवृत्ति और पेशेवर सहायता प्राप्त करने में बाधाऐं।

इसके अलावा अध्ययन में साक्षात्कारों में गुणात्मक प्रश्न शामिल किए गए ताकि बेरोजगारी नौकरी की तलाश की चुनौतियां और मानसिक स्वास्थ्य देखभाल की धारणाओं के साथ व्यक्तिगत अनुभव का पता लगाया जा सके मात्रात्मक को गुणात्मक दोनों तरह के संयोजन ने मध्य प्रदेश में युवा बेरोजगार और मानसिक स्वास्थ्य के बीच के अंतर संबंध की व्यापक समाज प्रदान की।

निष्कर्ष

अध्ययन में मध्य प्रदेश की युवाओं में बेरोजगारी मानसिक स्वास्थ्य और शिक्षा के बीच जटिल संबंध पर प्रकाश डाला गया है यह सुझाव देता है कि बेरोजगार युवाओं में मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे एक गंभीर चिंता का विषय है जिन्हें मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं और आर्थिक अवसरों तक भीतर पहुंच के माध्यम से संबोधित करने की आवश्यकता है प्रणाम यह भी सुझाव देता है की शैक्षिक कार्यक्रम चिंता को कम करने और बेहतर आर्थिक संभावना प्रदान करने युवाओं के समग्र मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं कौशल विकास रोजगार के अवसर और मानसिक स्वास्थ्य सहायता को लक्षित करने वाली नीतियां ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में युवाओं द्वारा सामना किया जाने वाले मानसिक और आर्थिक भुज को कम करने के लिए आवश्यक है ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं के लिए रोजगार के अवसरों और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं

में अंतर को बांटने के लिए लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके की चुनौतियों का सामना करने के बावजूद अधिक स्वस्थ अधिक संतुष्ट जीवन जी सके।

संदर्भ सूची

1. घोष ए.के. (2016) भारत रोजगार रिपोर्ट 2016 ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस यूएस.ए.
2. कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (2020) वार्षिक रिपोर्ट 2019-2020 भारत सरकार।
3. बनर्जी ए.वी.और डुफ्लो (2019) कठिन समय के लिए अच्छा अर्थशास्त्र पैग इन यू.के.।
4. एल्डर. एस. कारसोस एस स्पैरेबूम, टी., और अंतर्राष्ट्रीय श्रम कार्यालय (2021) युवाओं के लिए वैश्विक रोजगार रुझान युवाओं पर वैश्विक आर्थिक संकट के प्रभाव पर विशेष मुद्दा अंतर्राष्ट्रीय श्रम कार्यालय।
5. http://en.wikipedia.org.